हि
२५१०

कुरान की झाँकी

मूल्य =)

स्वामी सत्यभक्त
संस्थापक सत्याश्रम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रस्तावना

कुरान समुद्र के समान एक महान ग्रन्थ है, उसकी थाह ना और उसमें से रत्न ढूँढ निकालना एक साधारण काम नहीं । इसके लिए समय, योग्यता, रुचि और निष्पक्ष दृष्टि की आव-फता है जो किसी किसी में ही सुलभ हैं । यही कारण है कि त मे लोग जिनमें ऐसे लोग भी कम नहीं होते हैं जिन्हें शिक्षित ेक विद्वान भी कहा जाता है, कुरान के नाम पर मनचाही बातें ड़ दिया करते हैं । एक तरफ़ मुसलमान बिना समझेबूझे मन-हे गीत गालिया करते हैं दूसरी तरफ़ गैरमुसलमान मनचाही दा कर लिया करते हैं । मज़हब का घमंड लोगों में यूं ही रहता और वह ऐसी बातों से और बढ़ता है जिससे वैर और झगड़े ा होते हैं और धर्म के नाम पर अधर्म का, फ़रिश्ते के नाम पर तान का, नंगा नाच होता है ।

दुर्भाग्य यह है कि लोग दूसरे के धर्म ग्रन्थों को नहीं पढ़ते । दे लोग एक दूसरे के धर्म ग्रन्थों को पढ़ें और अपने अपने मज़-। के ग्रन्थ पढ़ने के साथ साथ दूसरे धर्म ग्रन्थों को भी ठीक ठीक झें तो कोई वजह नहीं है कि यह मज़हब जो आज घमंड वैर ी और संघर्ष का अड्डा बना हुआ है, प्रेम और शान्ति का घर बन जाय । श्री. सत्यभक्तजी ने इसी ध्येय को मन रखते हुये यह छोटी सी पुस्तक लिखी है । जिन लोगों के स कुरान सरीखे विशाल ग्रन्थ को पढ़ने के लिये समय रुचि या ग्यता नहीं है वे भी इस पुस्तिका का उपयोग कर सकते हैं । सलमान और गैरमुसलमान, दोनों के लिये यह पुस्तक बहुत पयोगी है । बहुत से मुसलमान कुरान नहीं पढ़ते या नहीं पढ़पाते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस लिए मज़हब के नाम पर ऐसी हरकतें कर बैठते हैं जो कुरान की नसीहतों और कुरान के हुक्मों के बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं। ऐसे मुसलमान इस पुस्तक को पढ़ कर अपनी भूल सुधार सकते हैं। बहुतसे ग़ैरमुसलमान कुरान को पढ़े बिना इसलाम और मुसलमानों के बारे में ग़लतफ़हमियों के शिकार हो जाते हैं और उन के बारे में बेहूदी बातें कह दिया करते हैं जो झूठी और नुक़सानदेह होती हैं। ऐसे लोग भी 'कुरान की झाँकी, देखकर अपने भ्रम का निराकरण कर सकते हैं।

'कुरान की झाँकी' में कुरान के उपदेश कुरान के ही शब्दों में रखे गए हैं, कहीं कहीं मतलब को साफ़ करने के लिए कोष्टक में अलग पैराग्राफ़ बना कर सत्यभक्तजी ने अपना मत भी दे दिया है जिससे पाठकों को समझने में सहूलियत हो।

श्री. सत्यभक्तजी सर्व-धर्म-समभाव के प्रणेता हैं। आपका विश्वास है कि सर्व-धर्म-समभाव के बिना मज़हबों के बाहमी झगड़े नहीं मिट सकते, मानवता का प्रचार नहीं हो सकता। इसीलिये आपकी यह इच्छा है कि सभी धर्मों के मूलग्रन्थों के सार इसी तरह की छोटी छोटी किताबों के रूप में रखे जाने चाहिए ताकि थोड़े समय में थोड़ी पढ़ाई से और थोड़े ख़र्च में लोग अपने और दूसरों के धर्मग्रन्थों को ठीक ठीक समझ सकें।

हमारी इच्छा है कि यह पुस्तक घर घर में पहुँचे, और सब मुसलमान व ग़ैरमुसलमान इसे पढ़ें। हम आशा करते हैं कि श्री. सत्यभक्तजी के इस प्रयत्न का पूरा पूरा सदुपयोग किया जायगा।

—रघुवीरशरण दिवाकर
बी. ए., एल-एल. बी.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कुरान की झाँकी

नं. २५१०

१ सूरे फ़ातिहा

१—हर तरह की तारीफ़ खुदा ही को है।

२ सूरे बक़र

१—बेशक मुसलमान और यहूदी और ईसाई और साइबी इनमें से जो लोग अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान लायें और अच्छे काम करते रहें तो उनको उनका अज्र उनके पर्वर्दिगार के यहां मिलेगा।

[१—उस समय हर एक महज़ब में से अच्छी अच्छी बातें चुनलेनेवाला एक गिरोह था जिसे साइबी या साबी कहते थे। २—रोज़ेआख़िरत अर्थात क़यामत पर यक़ीन रखने का मतलब है अच्छे बुरे कामों के नतीजे पर यक़ीन रखना, जिससे आदमी बुराई से बचे और भलाई करता रहे। ३—इस आयत से मालूम होता है कि कुरान मुसलमान होने पर ज़ोर नहीं देता, भलाई बुराई के ख़याल पर ज़ोर देता है। मज़हब तुम कोई भी रक्खो पर नेकी बदी के फल पर यक़ीन रक्खो जिससे नेकी की तरफ़ तुम्हारा दिल जाये और बदी से बचता रहे]

२—माँ बाप के साथ सलूक करते रहना और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ भी। और लोगों से अच्छी तरह बात करना। और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३—हम कोई आयत मन्सूख़ करदें या ज़हन से उसको उतार दें तो उससे बेहतर या वैसी ही नाज़िल कर देते हैं

[इससे पता लगता है कि इसलाम ज़माने के मुताबिक़ सुधार करने के ख़िलाफ़ नहीं है। इसीलिये इसलामकी शुरूआत में ही नई आयतों ने पुरानी आयतों को मनसूख़ किया है। ऊपर की आयत इन पर सच्चाई की छाप लगाती है।]

४—जो कुछ भलाई अपने लिये पहिले से भेज दोगे उसको ख़ुदा के यहां पाओगे।

५—अल्लाह ही का है पूरब और पश्चिम, तो जहाँ कहीं मुँह करलो उधर ही को अल्लाह का सामना है।

६—जबाब दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और (उस पर) जो हम पर उतरा और जो इब्राहीम इस्माईल और इस्हाक और याकूब पर उतरा और मूसा ईसा को मिला और जो दूसरे पैग़म्बरों को उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से मिला हम इनमें से किसी एक में भी जुदाई नहीं समझते।

[इससे मालूम होता है मुसलमान को सब किताबों (धर्म शास्त्रों) और सब मज़हबों के पैग़म्बरों पर एकसा यक़ीन रखना चाहिये]

७—नेकी यही नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व की ओर करो या पच्छिम की ओर करो, लेकिन भलाई उनकी है जो अल्लाह और क़यामत के दिन पर और फ़रिश्तों और सब किताबों (धर्म-शास्त्रों) और सब पैग़म्बरों पर ईमान लाये।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

८–जिस तरह तुम से पहिले लोगों पर रोज़ा (उपवास) रखना फ़र्ज़ था तुम पर भी फ़र्ज़ किया गया जिससे तुम बहुत से गुनाहों से बचो । और जिनको खाना देना ज़रूरी है उन पर एक रोज़े का बदला एक मोहताज को खाना खिला देना है ।

९–रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना तुम्हारे लिये जायज़ कर दिया गया है । अल्लाह ने देखा कि तुम चोरी चोरी उनके पास जाने से अपना दीनी नुक़सान करते थे ।

(आमलोग मज़हबी उसूलों पर ईमानदारी से कितना अमल कर सकते हैं इसका काफ़ी ख़याल इसलाम में रक्खा गया है इसीलिये ज़रूरत के मुताबिक़ आयतें मनसूख होती रही हैं ।)

१०--जो लोग तुम से लड़ें तुम भी अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो मगर ज़ियादती न करना। अल्लाह ज़ियादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता ।.....जब तक काफ़िर अदबवाली मसजिद के पास तुम से न लड़ें तुम भी उस जगह उनसे न लड़ो ।....अपने हाथों अपने को हलाकत में न डालो (हत्या में न फँसाओ) और एहसान करो ।

११--हज के दिनों में न कोई शहवत (स्त्री पुरुष का सहवास) की बात करे, न गुनाह की, न लड़ाई की ।

१२--शराब और जुए के बारे में दर्याफ्त करते हैं । कह दो इन दोनों में बड़ा गुनाह है ।

१३–यतीमों के बारे में समझा दो कि उनकी बेहतरी बेहतर है और उनसे मिलजुलकर रहो , वे तुम्हारे भाई हैं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१४--हैज़ (मासिक धर्म) के दिनों में औरतों से अलग रहो। जब तक पाक न होलें उनके पास मत जाओ।

१५--जो लोग अपनी बीवियों के पास जानेकी क़सम खा बैठें उनको चार महीने की मोहलत है। फिर (इस मुद्दत में) अगर रुजू करलें तो अल्लाह बख़्शनेवाला महर्बान है और अगर तलाक़ की ठान लें तो अल्लाह सुनता जानता है। और जिन औरतों को तलाक़ दी गई है वे अपने आपको तीन दफ़े कपड़ों के आने तक रोके रक्खें।

जो कुछ भी खुदा ने उनके पेट में छिपा रक्खा है (गर्भ) उसका छिपाना उनको जायज़ नहीं। .....जैसा (मर्दों का हक़) औरतों पर वैसे ही दस्तूर के मुताबिक़ औरतों का हक़ मर्दों पर)। .....जो कुछ तुम औरतों को दे चुके हो (स्त्री-धन, महर) उसमें से कुछ भी वापिस लेना जायज़ नहीं।

१६--औरत को अगर तीसरी बार तलाक़ दे दो तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे शौहर से निकाह न करे उसके लिये जायज़ नहीं।

(इसलाम के पहिले लोग दस दस बार तलाक़ दिया करते थे। तलाक़ की मुद्दत ख़त्म होने को आई और बुला लिया, दो चार दिन रक्खा और फिर तलाक़ दे दिया। इस तरह सालों तक उन औरतों को बन्दिश में रख कर तड़पाया करते थे इसलिये इसलाम ने तीसरे तलाक़ को आख़री तलाक ठहरा दिया)

१७--जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और वे अपनी मुद्दत पूरी करलें और जायज़ तौर पर आपस में उनकी मर्ज़ी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिल जाय तो उनको दूसरे शौहरों के साथ निकाह कर लेने से न रोको।

१८-तुम में जो लोग बीवियाँ छोड़ मरें तो वे बीवियाँ चार माह दस दिन तक अपने को रोक रक्खें। [मुद्दत पूरी होने पर निकाह करें]

१९-अपने हक़ को छोड़ देना ज़्यादह परहेज़गारी की बात है, इस बड़प्पन को मत भुलाओ जो तुम्हारे बीच है।

२०-जो लोग अल्लाह की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस दाने की सी है जिससे सात बालें पैदा हुईं और हर बाल में सौ दाने ।.....अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं और एहसान नहीं जताते और न लेनेवाले को किसी तरह की तकलीफ़ देते हैं उनका सवाब उनके पर्वादिगार के यहां मिलेगा।

२१-नर्मी से जवाब दे देना और दरगुज़र करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके पीछे तकलीफ़ लगी हो।....अपनी ख़ैरात को एहसान जताने और ईज़ा देने से उस शख़्श की तरह अकारथ न करो जो अपना माल लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च करता है।

२२-अगर ख़ैरात ज़ाहिर में दो तो वह भी अच्छा और अगर उसको छुपाओ [गुप्तदान] और हाजतमन्दों को दो तो यह तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है।

२३-जो लोग सूद (ब्याज) खाते हैं वे खड़े न हो सकेंगे। तिजारत को अल्लाह ने हलाल किया है और सूद को हराम। अगर तुम ईमान रखते हो तो जो सूद बाक़ी है उसे छोड़ दो।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२४—पैग़म्बर उस किताब को मानते हैं जो उनके परवर्दिगार की तरफ़ से उनपर उतरी है, और पैगम्बर के साथ दूसरे मुसलमान भी अल्लाह, उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों में से किसी एक को भी जुदा नहीं समझते।

३ सूरे आलि इम्रान

१—हम तो उन पैग़म्बरों में से किसी एक में (भी फ़र्क़ नहीं करते।

२—जो लोगों को नेक कामों की तरफ़ बुलाएँ और अच्छे काम को कहें और बुरे कामों से मना करें ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेंगे।

३—मुसलमानो, सूद न खाओ।

४—जन्नत [स्वर्ग] उन परहेज़गारों के लिये तय्यार है जो खुशहाली और तंगदस्ती में भी ख़र्च करते हैं और गुस्से को रोकते और लोगों के क़सूरों को माफ़ करते हैं। लोगों के साथ नेकी करनेवालों को अल्लाह दोस्त रखता है।

५—तुम उनको, जो अल्लाह की राह में मारे गये हैं मुर्दा न समझो।

६—दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोखे की पूँजी है।

४—सूरे निसाअ

१—यतीमों का माल उनके हवाले करो उनकी किसी अच्छी चीज़ को अपनी बुरी चीज़ से न बदलो, और उनका माल अपने माल में मिलाकर खुर्दबुर्द न करो।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२–अगर तुमको यह अन्देशा हो कि (कई बीवियों में-ज्यादा से ज्यादा चार) बराबरी के साथ बर्ताव न कर सकोगे तो एक ही बीवी या जो तुम्हारे पास है बस है ।

३–यतीमों का माल उनके हवाले कर दो, और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के अन्देशे से फुजूलख़र्ची करके जल्दी जल्दी उनका माल खा पी डालो ।....जो लोग नाहक़ यतीमों का माल खा जाते हैं वे अपने पेटों में आग भरते हैं।

४–उन लोगों की तौबा क़ूबूल नहीं जो उम्र भर बुरे काम करते रहे ।

५–तुम्हें जायज़ नहीं है कि औरतों को बपौती समझकर ज़बरदस्ती उन पर क़ब्जा करलो । जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ छीन लेने की नीयत से उनको क़ैद न रक्खो । बीवियों के साथ हुस्न सलूक से रहो भले ही वे तुम्हें नापसन्द हों, अजब नहीं कि कोई चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुतसी ख़ैर दे ।

६--अगर तुम्हारा इरादा एक बीवी को बदल कर उसकी जगह दूसरी बीवी करने का हो तो जो तुमने पहिली बीवी को बहुत सा माल दे दिया हो उसमें से कुछ भी वापिस न लेना ।

७–जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया तुम उनके साथ निकाह न करना मगर जो हो चुका सो हो चुका। यह बड़ी बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बहुत ही बुरा दस्तूर था । तुम्हारी माएं बेटियां बहिनें फूफियां ख़ालाएं (मौसी)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भतीजियां भानजियां, रज़ाई माएं [धायमा] जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूधशरीकी बहिनें, तुम्हारी सासें तुमपर हराम हैं और जिन बीवियों के साथ तुम सोहबत कर चुके हो उनकी लड़कियां, तुम्हारे बेटों की बीवियां तुमपर हराम हैं [तुम इनके साथ निकाह शादी-नहीं कर सकते] मगर जो हो चुका सो हो चुका।

[इससे मालूम होता है कि शादी के बारे में यह अन्धाधुन्धी अरब में फैली हुई थी जिसे इसलाम ने दूर किया]

८--मां बाप, रिश्तेदार, यतीम, ग़रीब, नज़दीकी पड़ौसी अजनबी पड़ोसी, पास बैठनेवाले मुसाफ़िर और जो तुम्हारे कब्जे में हों-नौकर चाकर-इन सब के साथ भलाई के साथ पेश आओ क्योंकि अल्लाह उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो इतराते हैं, बड़ाई मारते हैं, खुद कंजूसी करते हैं और दूसरों को कंजूसी की तरफ़ ले जाते हैं और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जो कुछ उन्हें दे रक्खा है उसे छिपाये रखते हैं।

(कंजूसी के साथ दिखावटी खर्च को भी बुरा कहा गया है, न कंजूस बनो, न हैसियत से ज़्यादा ख़र्च करो यही ठीक रास्ता है)

९-जब तुम नशे की हालत में रहो तब नमाज़ के पास भी न जाना जब तक कि जो कुछ कहते हो समझने लगो, और नहाने की हाज़त हो तो भी नमाज के पास न जाना जब तक कि गुस्ल न करलो।

(पहिले शराब नमाज़ के वक्त के लिये हराम थी पीछे हमेशा के लिये हराम हो गई। नहाने वगैरह की बात से यह साफ़

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मालूम होता है कि इसलाम साफ़ सफ़ाई और नहाने पर भी ज़ोर देता है, हां अगर कहीं पानी न मिले या मिलना मुश्किल हो तो मिट्टी वगैरह से ही सफ़ाई की इजाजत देता है । इसलाम आदमी को भीतर की और बाहर की यानी रूहानी और जिस्मानी सफ़ाई पर ज़ोर देता है ।....नमाज़ में जो पढ़ा जाता है वह भी हर मुसलमान को अच्छी तरह समझना चाहिये)

१०– अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानतें उनके हवाले कर दिया करो और जब लोगों के बाहमी झगड़े फैसला करने लगो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो ।

११– मुसलमानो, मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो; खुदा लगती गवाही दो, अगरचे गवाही तुम्हारे अपने मां या बाप और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो ।

५—सूरे माइदह

१– बाज़ लोगों ने तुम्हें जो हुर्मतवाली मसजिद [काबा] में जाने से रोका था, यह अदावत तुमको ज़्यादती करने की बाइस न हो और नेकी और पर्हेज़गारी में एक दूसरे के मददगार हो जाया करो और गुनाह और ज़्यादती के कामों में एक दूसरे के मददगार न बनो ।

(इसलाम की शुरुआत में मुहम्मद साहिब और मुसलमानों को मक्के के लोगों ने बहुत सताया था । उस बात को याद करके मुसलमान लोग ऊधम न मचायें, बदला न लेने लगें, इसके लिये यह आयत है । इसलाम ज़्यादह से ज़्यादह क्षमा और शान्ति का उपदेश या सबक़ देता है ।)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२--मुसलमानो, जब नमाज़ के लिये आमादा हो तो अपने मुँह धोलिया करो और कोहनियों तक अपने सरों का मसह कर लिया करो और टख़नों तक अपने पांव भी धोलिया करो, और अगर तुम को नहाने की हाजत हो तो गुस्ल करके अच्छी तरह पाक साफ़ हो जाओ और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई पाख़ाने से आया हो या तुम स्त्रियों के पास गये हो और फिर तुम्हें पानी न मिले तो तयम्मुम कर लिया करो (साफ़ मिट्टी लेकर अपने हाथों और मुंह का मसह करलो) अल्लाह तुम्हें तंग नहीं करना चाहता मगर तुम्हें साफ़ सुथरा रखना चाहता है ।

३—इन्साफ़ की गवाही देने के लिये हमेशा तैयार रहा करो और किसी अदावत के सबब इन्साफ़ को न छोड़ो । सब के साथ इन्साफ़ करो यही पर्हेज़गारी से क़रीब है ।

४—हमने (वक्तन फ़वक्तन) तुममें से हर के लिये एक शरीअत ठहराई और तरीक़ा (ख़ास) और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही (दीनदी) उम्मत करता लेकिन (जुदी जुदी शरीअतों के भेजने से) यह मक़सद रहा कि जो हुक्म [तुम्हारी हालत के मुताबिक वक्तन फ़वक्तन] तुमको दिये उनमें तुम्हें आज़माये। तुम नेक कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो।

(इससे मालूम होता है कि इस्लाम किसी एक शरीअत का गुलाम नहीं है न किसी एक रस्म या रिवाज का गुलाम है, वह लोगों के मुआफ़िक शरीयत का हिमायती है । उसके अनुसार अल्लाह हर एक आदमी की अक्ल की जाँच करता है । अपने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुआफ़िक अगर वह शरीयत पर ईमान ला सके तो वह सच्चा मुसलमान कहा जा सकेगा।]

६—सूरे अनआम

१—कहो कि मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूं कि तुम को कुफ्र न करने दूं।

मेरा काम इतना है कि तुमको खुदा का पैग़ाम पहुंचा दूं उसपर अमल करना या न करना तुम्हारा काम है।

[इससे साफ़ मालूम होता है कि इसलाम में मज़हब के नाम पर किसी क़िस्मकी ज़बर्दस्ती नहीं है सिर्फ़ उपदेश है।]

२-हमने तुमको इनपर मुहाफ़िज़ (अभिभावक) तो (मुक़र्रिर) किया नहीं और न तुम इनपर तईनात हो। और जो लोग खुदा के सिवा दूसरे माबूदों को बुलाया करते हैं उनको बुरा न कहो।

[इसलाम नास्तिकों वग़ैरह की भी बुराई करने की इजाज़त नहीं देता, इसलाम की यह बड़ी भारी उदारता है।]

३--बहुतेरे मुश्रिकीन को उनके शरीकों ने उनको अपने बच्चे मार डालने को उम्दा कर दिखाया ताकि उनको हलाकत में डाल दे।...इनको और इनके झूटी बात बनाने के विचार को छोड़ो। बेशक वे लोग घाटे में हैं जिन्होंने बदअक्ली से अपने बच्चों को मार डाला।

[इसलाम के पहिले अरब में बहुत बाल-हत्या होती थी जिसे इसलाम ने रोका।]

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४--फ़ज़ूल ख़र्ची न करो क्योंकि फ़ज़ूलख़र्ची करनेवालों को खुदा पसन्द नहीं करता।

[इसलाम में कंजूसी की भी मुख़ालफ़त है और फ़ज़ूल-ख़र्ची की भी, इसलाम बीच का सच्चा रास्ता बताता है।]

५--मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करते रहो और मुफ़लिसी के डर से अपने बच्चों को क़त्ल न करो। हम तुमको खाना देते हैं उनको भी।

[अरब के लोग ग़रीबी के डरसे और लड़की का बाप कहलाने की बेइज्जती के डरसे भी अपने बच्चों को ज़िन्दे ही ज़मीन में गाड़ देते थे यह क्रूरता और जहालत भी इसलाम ने दूर की।]

६--यतीम के माल के पास भी न जाओ।

७--इन्साफ़ के साथ पूरी पूरी नाप करो।

८--जब तुम बोलो तो सच बात ही बोलो और फ़ैसला करो तो इन्साफ सेही करो।

७-- सूरे अअराफ

१--खाओ और पियो फ़ज़ूलाख़र्चियां न किया करो क्योंकि खुदा फ़ज़ूलख़र्च करनेवालों का पन्सद नहीं करता।

२--खुदा की रहमत नेक काम करने वालों से क़रीब है।

३--क्या तुम ऐसी बेहयाई के मुर्तकिब होते हो कि जहान में तुम से पहिले किसी ने ऐसी बेहयाई नहीं की कि तुम औरतों को छोड़कर शहवतरानी के लिए मर्दों पर मायल होते हो। मगर तुम लोग हद से गुज़र गये हो।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[इस्लाम ने मर्द मर्द में व्यभिचार के पाप को भी दूर किया और पैग़म्बर लूत के हवाले से लोगोंको यह बात समझाई ।]

४--नाप और तोल पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ कम न दिया करो ।

५--तुम हमको हरगिज़ देख न सकोगे ।

[हजरत मूसा अपनी आंखो से अल्लाह को देखना चाहते थे पर नहीं देख सके । सचमुच कोई आदमी अपनी इन आंखों से खुदा को नहीं देख सकता सिर्फ़ अक्ल की आंखों से ही देख सकता है ।]

८--सूरे अन्फ़ाल

१--जाने रहो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बस बखेड़े हैं ।

२--जो क़ैदी तुम्हारे क़ब्जे में हैं इनको समझादो कि अगर अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे दिलों में नेकी है तो जो माल तुमसे छीना गया है उससे बेहतर तुमको अता फ़र्माएगा और तुम्हारे क़सूर भी माफ़ करेगा ।

[बदमाश बदमाशी न कर सकें इसका ख़याल रखते हुए विरोधियों के साथ—भले ही वे हार कर क़ैदी ही क्यों न हो गये हों— इसलाम अच्छे से अच्छा सलूक करने का उपदेश देता है ।]

९-सूरे तौबा

१-मसजिद वह है जिसकी नींव शुरू से ही परहेज़गारी पर रक्खी गई है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[सहूलियत के लिये मसजिदें बनाने में बुराई नहीं है लेकिन लड़ाई झगड़ा या दलबन्दी के लिये जो मसजिद बनाई जाय वह नापाक मसजिद है। हज़रत मुहम्मद साहिब के समय में भी कुछ लोगों ने एसी एक मसजिद बनवाई थी। लेकिन रसूलल्लाह ने वह मसजिद नापाक कहकर गिरवा दी।]

१०--सूरे यूनुस

१—जिन लोगों ने भलाई की उनके लिये भलाई है और कुछ बढ़कर भी···। और जिन लोगों ने बुरे काम किये तो बुराई का बदला वैसी ही बुराई है।

२—हर क़ौम के लिए रसूल मिला है।

१०—सूरे रअद

१-तुम तो सिर्फ़ ख़बरदार कर देनेवाले हो और [तुम कुछ अनोखे पैग़म्बर नहीं] हर एक क़ौम का (एक न) एक हिदायत करने वाला [हो गुज़रा] है।

[लोग हज़रत मुहम्मद साहिब से तरह तरहकी निशानियाँ मांगा करते थे पर ये सब बातें इसलाम के और सचाई के ख़िलाफ़ हैं। किसी भी पैगम्बर को मोजिज़ा या चमत्कार दिखाने का या गुप्त बातें कहने का अधिकार नहीं है। रसूलों का काम पाप का बुरा नतीजा दिखाकर लोगों को धर्म का पाठ पढ़ाना है।]

१४—सूरे इब्राहीम

१-जब हमने कोई पैग़म्बर भेजा तो उसको उसी की क़ौम की ज़बान में बातचीत करता हुआ भेजा है ताकि वह उनको अच्छी तरह समझा सके।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[पुरानी ज़बान में कोई भी धर्म-प्रचार नहीं करता। इस लिहाज़ से हिन्दुस्तान में संस्कृत प्राकृत अरबी फ़ारसी आदि ज़बानों में धर्म-प्रचार न करना चाहिये।]

१६—सूरे नहल

१ हम हर एक उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते हैं।

२—हमने कुरान तुम पर सिर्फ़ इसीलिये उतारा है ताकि तुम इन लोगों को धर्म की वे बातें बतादो जिनके बारे में ये लोग झगड़ रहे हैं

(मतभेद मिटाना सब को मिलाना अमन, क़ायम करना कुरान का और इसलाम का ख़ास मक़सद है]

३—हम एक आयत को बदलकर उसकी जगह दूसरी आयत नाज़िल करते हैं और अल्लाह जो नाज़िल फ़र्माता है उसको वही खूब जानता है।

[हर एक मज़हब मौक़े के मुताबिक़ नियम बनाया करता है, बदला करता है। मज़हब रूढ़ि के गुलामों को नहीं, समझदारों को मिलता है। इसलाम में इस समझदारी को कितनी जगह है यह बात ऊपर की आयत से साफ़ मालूम होती है]

४—सख़्ती भी करो तो वैसी ही करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो और अगर सब्र करो तो करने वालों के हक़ में सब बेहतर है।

[किसी काम में सख़्ती करने की इजाज़त इसलाम नहीं देता। सख़्ती के जवाब में सिफ़ उतनी ही सख़्ती करने की इजाज़त देता है जितनी उनके ऊपर की गई है और जो सख़्ती के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहन करलेते हैं उनके काम को तो और भी अच्छा बतलाता है। इससे मालूम होता है कि इसलाम अमन चाहता है, अहिंसा चाहता है।)

५–अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेज़गारी करते हैं (संयमी हैं) और लोगों के साथ भलाई से पेश आते हैं।

१७––सूरे बनी इस्राइल

१-अगर तुम नेकी करोगे तो अपने ही लिये करोगे।

२--मां बाप से अच्छी तरह पेश आना। अगर इन दोनों में से एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुंचे तो (इससे तुझे कितनी भी तकलीफ़ क्यों न हो) उफ़ तक न करना और मुहब्बत से ख़ाकसारी का पहलू उनके आगे झुकाए रखना।

३–रिश्तेदार, ग़रीब, और मुसाफ़िर को उसका हक़ पहुँचाते रहो और बेजा मत उड़ाओ (ऐयाशी न करो) क्योंकि बेजा उड़ानेवाले शैतानों के भाई हैं।

अगर तुम को पर्वादिगार के फ़ज़्ल के इन्तिज़ार में जिसकी तुमको उम्मीद हो इनसे मुँह फेरना पड़े [यानी तुम ग़रीबों वग़ैरह की मदद न कर सको] तो नर्मी से इन्हें समझादो। [झिड़को मत]

५ अपना हाथ न तो इतना सिकोड़ो कि (गोया) गर्दन से बँधा हो न बिलकुल उसको फैला ही दो, ऐसा करोगे तो तुम ऐसे ही बैठे रह जाओगे कि लोग तुमको मलामत भी करेंगे और तुम ख़ाली हाथ भी हो जाओगे।

६--ग़रीबी के डर से अपनी औलाद को न मार डाला करो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उनको और तुम को हम ही रोज़ी देते हैं । औलाद को जान से मार डालना बड़ा भारी गुनाह है ।

७--ज़िना (व्यभिचार) के पास न फटकना क्योंकि वह बेहयाई है और बदचलनी की बात है।

८--बदला लेने में ज़ियादती न करो ।

९--जब माप कर दो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो, डंडी सीधी रख कर तोला करो ।

११-जिस बातका तुझको इल्म नहीं उसके पीछे न पड़ जाया कर । समझ बूझकर काम किया कर ।

१२--ज़मीन पर अकड़ कर न चला कर क्योंकि न तो तू ज़मीन को फाड़ सकेगा न पहाड़ों बराबर लम्बा हो सकेगा । [घमंड न किया कर]

३--हमारे बन्दों को समझादो कि (अपने मुख़ालिफ़ों से भी कोई बात कहें तो) ऐसी कहें कि वह बेहतर (मीठी) हो क्योंकि शैतान (सख़्त बात कहलवाकर) लोगों में फ़साद डलवाता है ।

(इसलाम की अमनपसन्दी और इख़लाक़ का यह कितना अच्छा नमूना है कि विरोधियों से बात करने में भी सख़्त बात कहने की मनाई है)

१४--और (ऐ पैग़म्बर लोग) तुम से रूह (आत्मा) की हक़ीक़त दर्याफ्त करते हैं कहदो कि रूह मेरे पर्वर्दिगार का एक हुक्म है और तुम लोगों को बस थोड़ा ही इल्म दिया गया है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[धर्मशास्त्र यानी मज़हब और दर्शनशास्त्र यानी फ़लसफ़ा जुदाजुदा शास्त्र हैं। लोग मज़हब और फ़लसफ़े को मिलाकर बड़ी गड़बड़ी करते हैं और अपने फ़र्ज़ को भुलाकर फ़ज़ूल की बहसों में पड़जाते हैं। इस आयतसे इसलामने ऐसी बहसों की जड़ काटदी! मज़हब का काम नीति और सदाचार का पाठ पढ़ाना है फ़लसफ़े की गुत्थियाँ सुलझाना नहीं]

१५—कहो कि तुम अल्लाह पुकारो या रहमान पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो सब नाम अच्छे हैं।

[नाम पर झगड़ना जहालत है, खुदा अल्लाह रहमान, रहीम, ईश्वर, भगवान, हक़, सत्य, गॉड रब, शिव, शङ्कर, महादेव, राम, अहुरमज्द वग़ैरह सब नाम उसीके हैं।

दीन इसलाम में जिसको कि खुदा कहते हैं,
वो ही हिन्दूसे न भगवान कहा जाता क्या?
जुदाई देखना इनमें है बड़ी नासमझी,
खुदाभी नाम बदलने से बदलजाता क्या?

१६—न तो अपनी नमाज़ चिल्लाकर पढ़ो और न उसको चुपके पढ़ो, बीचका तरीक़ा इख्तियार करलो।

२० सूरे ताहा

१—(सब) अच्छे नाम उसी (अल्लाह) के हैं।

२१—सूरे अम्बिया

१—लोगों ने आपस में (इख्तिलाफ़ करके) दीन के टुकड़े

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

टुकड़े कर डाले (लेकिन आख़िरकार) सब हमारी ही तरफ़ को लौटकर आने वाले हैं।

[धर्मों की एकता पर इस्लाम काफ़ी ज़ोर देता है।]

२२—सूरे हज्ज

१—हमने हर एक उम्मत के लिये (इबादत के) तरीक़े क़रार दिये कि वह उन पर चलते हैं।

(हर एक क़ौम के पूजापाठ के तरीक़े जुदा जुदा हैं इसलाम किसी के तरीक़े में बाधा नहीं डालना चाहता)

२४—सूरे नूर

१—मुसलमानो, अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में घर वालों से पूछे बिदून और उनसे अस्सलामु अलैकुम् (तुम पर शान्ति हो) कहे बिदून न जाया करो।....अगर तुम को मालूम हो कि घर में कोई आदमी मौजूद नहीं तो जब तक तुम्हें ख़ास इजाज़त न हो उनमें न जाओ, और अगर तुम से कहा जाय लौट जाओ तो लौट आओ। यह [लौट आना] तुम्हारे लिये ज़्यादह सफ़ाई की बात है।

२—मुसलमानों से कहो कि अपनी नज़रें नीची रक्खें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें।

[बुरी नज़र से स्त्रियों को देखना या घूरना, काम के अंगों को दिखाना इसलाम में मना है। स्त्रियों के लिये भी ऐसा ही हुक्म है।]

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३—अपनी विधवाओं के निकाह (विवाह) करदो। और अपने गुलामों दासियों मे से उनके, जो नेकबख्त हों।

४—जो लोग निकाह करने का मक़दूर नहीं रखते उनको चाहिये कि ज़ब्त करें (ब्रह्मचर्य से रहें)।

५—जो तुम्हारी दासियाँ पाकदामन रहना चाहती हैं उनको दुनिया की ज़िन्दगीके आरज़ी फ़ायदे की ग़रज़ से हरामकारी पर मजबूर न करो।

२५ सूरेफुर्क़ान

रहमान के बन्दे तो वह हैं जो ज़मीन पर दीनता के साथ चलें और जब जाहिल उनसे जहालत की बातें करने लगें तो (उनको) सलाम करें। जो खर्च करने लगें तो फ़ज़ूलखर्ची न करें और न बहुत तंगी करें बल्कि उनका खर्च इफ़रात और तफ़रीत के दरमियान बीच की रासका हो। जो नाहक़ किसी शख्स को जान से न मारें कि उसको खुदा ने हराम कर रक्खा हो. ....जो ज़िना के मुर्तकिब न हों, (व्यभिचार न करते हों)....न झूठी गवाही दें, जो बेहूदा बकवाद न करें, खेलतमाशों के पास से गुज़रे तो चुपचाप भले आदमी की तरह गुज़र जायँ।

(इस प्रकार के नेकचलन, अमनपसन्द आदमी ही सच्चे मुसलमान हैं। इसलाम की ख्वाहिश तो यह है कि जहां मुसलमान रहें वहां नेकी और अमन का राज्य होना चाहिये)

२६—सूरे शुअराअ

१—(कोई चीज़ लोगों को पैमाने से नाप कर दिया करते तो) पैमाना नाप कर दिया करो और [लोगों को] नुक़सान पहुँचाने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वाले न बनो और तराजू सीधी रखकर तोला करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और मुल्क में फ़साद फैलाते न फिरो।

२७–सूरे नम्ल

१--तुम बेहयाई (के काम के) मुर्तकिब होते हो और [एक दूसरे को] देखते भी जाते हो क्या तुम औरतों को छोड़कर शहवतरानी (के इरादे) से लड़कों पर गिरे पड़ते हो। बात यह है कि तुम बड़े जाहिल लोग हो।

[खुल्लमखुल्ला सम्भोग करना और पुरुषों का पुरुषों के साथ व्यभिचार करना ये असभ्यता के काम उस समय अरब में चालू थे, लूत पैग़म्बर के इतिहास के ज़रिये इसलाम ने इन दोनों कामों की निन्दा की और इन्हें रोका]

१—अगर तुम सच्चे हो तो खुदा के यहां से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों (कुरान तोरात) से हिदायत में बेहतर हो। मैं उसकी पैरवी करने को मौजूद हूं।

[हज़रत मुहम्मद साहब किसी किताब से बँधे हुये न थे, उन्हें तो नेकी का पाठ पढ़ाने से मतलब था, भले ही वह कोई भी हो। इस के मुताबिक़ सच्चा मुसलमान सदाचार का पाठ कुरान तोरात गीता वेद इंजील सूत्र पिटक अवस्ता वगैरह किसी भी किताब में से पढ़ेगा। इसलाम आदमी को बिना तआस्सुब का बेलाग और आज़ादख़याल बनाना चाहता है]

२९ सूरे अन्कबूत

१ क्या लोगों ने यह समझ रक्खा है कि इतना कहने पर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छूट जाँयगे कि हम ईमान ले आये ? और उनको आज़माया न जायगा ?

[अपने को मुसलमान कहने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता उसके लिये नेकी और ईमानदारीकी परीक्षा में पास होना ज़रूरी है ।

२--क्या जो बुरे अमल करते है उनने समझ रक्खा है कि हमारे क़ाबू से बाहर हो जायँगे ?

३--हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ अच्छा सलूक करने का हुक्म दिया ।

४--तुम किताब वालों के साथ झगड़ा (वादविवाद) न किया करो ।

[जिनके पास नीति सदाचार (अख़लाक़) सिखाने वाली कोई किताब नहीं है उन्हें सच्चाई और नेकी के रास्तेपर ले आना इसलाम का मक़सद है इसीलिये जो किसी मज़हब को मानते हैं जिसके पास कोई धर्म पुस्तक है इसलाम उन के साथ दोस्ताना बर्ताव रखना चाहता है । अरब के लोगों के पास कोई मज़हबी किताब नहीं थी इसलिये अरब के लोग यह बहाना करते थे कि हमारे पास कोई किताब ही नहीं है हम नीति सदाचार (नेकी) पर अमल कैसे करें (देखो सूरत साफ़्फ़ात) अरब वालों की इस काठिनाई को दूर करने के लिए कुरान आया, किसी धर्म वालों के झगड़ने के लिये नहीं । दूसरे धर्मवालों के साथ इसलाम कैसा दोस्ताना और बराबरी का व्यवहार रखना चाहता है यह बात आगे की आयतं से भी बड़ी अच्छी तरह मालूम होती हैं ।]

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

५—(इन लोगों से) कहो कि जो [किताब] हम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुमपर नाज़िल हुईं हम तो सभी को मानते हैं और हमारा खुदा और तुम्हारा खुदा एक ही है ।

[इसके बढ़कर उदारता और सच्चाई क्या होगी]

३१ सूरे लुक़मान

१—तुझपर जैसी पड़े झेल, बेशक यह हिम्मत के काम हैं और लोगों से बेरुखी न कर और ज़मीन पर इतराकर न चल, अल्लाह किसी इतराने वाले शेखीख़ोर को पसन्द नहीं करता और अपनी चाल बीच की रख और धीरे से बोल क्योंकि आवाज़ों में बुरी से बुरी आवाज़ गधों की है ।

३३ सूरे अहज़ाब

१—अपने घरों में जमी रहो, और अगले ज़माने के भद्दे बनाव सिंगार दिखाती न फिरो और नमाज़ पढ़ो और ज़कात[दान] दो ।

(इससे मालूम होता है कि इसलाम में स्त्रियों को भी नमाज़ वग़ैरह धार्मिक आचार के हक़ मर्दों की तरह हैं और ज़कात वग़ैरह फ़र्ज़ भी मर्दों सरीखे हैं । स्त्री पुरुषों में कुछ फ़र्क़ मान कर भी दोनों के अधिकारों को अधिक से ज्यादा से ज्यादा समान बनाने की कोशिश इसलाम ने की है और अरब की पुरानी स्त्रियों की निस्बत मुसलमान स्त्रियों के अधिकार कई गुणे बढ़ गये हैं ।

३५ सूरे फ़ातिर

१—कोई शख़्स किसी दूसरे का गुनाह अपने ऊपर नहीं लेगा और अगर किसी पर भारी बोझ हो और वह अपना बोझ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बटाने के लिये बुलाये तो उसका ज़रासा भी बोझ नहीं बटाया जायगा अगर्चे वह रिश्तेदार ही क्यों न हो ।

[अपने अपने पाप का फल अपने को ही भोगना पड़ता है सभी मज़हबों का यह उसूल इसलाम में भी है]

२--कोई क़ौम ऐसी नहीं कि उसमें कोई पैग़म्बर न हुआ हो ।

३६ सूरे यासनि

१--तुम ऐसे लोगों को [पाप से] डराओ जिनके बाप [दादे] नहीं डराये गये और (यही सबब है कि) वे ग़ाफ़िल हैं ।

४०--सूरे मोमिन

१--हमने तुन से पहिले रसूल भेजे, उनमें कुछ ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमको सुनाये और उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमको नहीं सुनाये ।

[सभी रसूलों को मानना मुसलमानों का फ़र्ज़ है यह बात पहिले कही गई है पर सभी रसूलों का यह मतलब नहीं है कि जिसके नाम कुरान में आये हैं वे ही माने जायें । नाम आया हो या न आया हो सभी खुदाके रसूल हैं इसलिये सभी को मानना चाहिये । इस आयत के मुताबिक़ मुसलमान दुनिया के किसी भी मज़हब का विरोध नहीं कर सकता, हां पाप कहीं भी हो उसका विरोध करेगा]

४१ सूरे हामीम सज्दह

१--नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती, बुराई के बदले में नेकी करो तो तुम देखोगे कि जो शख्स तुम्हारा दुश्मन था वह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तुम्हारा दोस्त हो जायगा। हुस्न मदारात उन्हीं लोगो को दी जाती है जो सब्र करते हैं।

४२–सूरे शूरा

(ऐ पैगम्बर) तुम उन (लोगों) पर कुछ तैनात हो नहीं। अरबी कुरान हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है ताकि तुम मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आसपास (बसते हैं) उनको [पाप] से डराओ।

[कुरान अरबी में क्यों उतरा इस की वजह यहां साफ़ दी गई है यही कारण है कि कुरान का ज्यादह हिस्सा अरबी के उस जमाने के ख़ास तौर के मुताबिक़ है। फिरभी कुरानमें ऐसी बातें भरी पड़ी हैं जो हर ज़माने और हर मुल्क के लिये मुफ़ीद हैं, उनका (इस्तेमाल) उपयोग सभी को करना चाहिये। हर धर्म-शास्त्र में ऐसी बातें बहुतसी रहती हैं पर विवेक और आदर से इन शास्त्रों को देखा जाय तो इन सब बातों की उपयोगिता समझ में आ सकती है।

४९ सूरे हुजुरात

१–अरब के रेगिस्तानी लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये। कहदो कि तुम ईमान नहीं लाये। हां, कहते हो कि तुम ईमान लाये। [अपने को मुसलमान कहने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता जबतक उस के काम मुसलमान के से नेक न हों]

५७ सूरे हदीद

१–तुम लोग कहीं भी रहो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम किया करते हो वह देखता है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[अगर हर एक आदमी इस आयत पर सच्चा यक़ीन रक्खे तो वह छुपकर भी पाप न कर सके। जो छुपकर भी पाप नहीं करता अल्लाह पर उसीका सच्चा यक़ीन मानना चाहिये।]

२-अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ीबाज़ को पसन्द नहीं करता।

६१--सूरे सफ़्फ़

१--मुसलमानो, ऐसी बात क्यों कह बैठा करते हो जो तुम करके नहीं दिखाते। (यह बात) अल्लाह को सख़्त नापसन्द है।

६७-सूरे मुल्क

१--तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो, ख़ुदा तो दिल की बातों से वाक़िफ़ है।

८८-सूरे ग़ाशियह

१-(ऐ पैग़म्बर, तुम लोगों को) समझाओ, तुम तो [ख़ाली] समझाने वाले हो और बस। तुम उनपर कुछ दारोग़ा की तरह तैनात नहीं हो।

[इससे मालूम होता है इसलाम धर्म प्रचार में ज़ोर ज़बर्दस्ती नहीं कराता। हज़रत महम्मद साहब को भी ख़ुदा ने ज़बर्दस्ती करने का हक़ नहीं दिया फिर दूसरों को तो मिल ही कैसे सकता है। रसूलल्लाह ने इसलाम का प्रचार समझाकर ही किया था। जो लोग यह कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहब ने इसलाम का प्रचार तलवार के ज़ोर से किया है उन्हें यह आयत पढ़कर अपनी भूल सुधार लेना चाहिये।]

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

९३--सूरे जुहा

१--यतीम पर जुल्म न करना और न भिखारी को झिड़कना।

१०४--सूरे हमज़हा

१--जो ऐबचीनी करता है आवाज़ें कसता है उसकी तबाही है ।

२--जो इस ख़याल से माल जमा करता और उसको गिन गिन कर रखता रहा कि वह माल की बदौलत हमेशा ज़िंदा रहेगा सो यह तो होना नहीं, वह ज़रूर [एक दिन] हजमह (दोजख़ की आग) में फेंका जायगा ।

११४--सूरे अन्नास

१--कहा करो कि मैं पनाह चाहता हूँ उस अल्लाह से जो सबका पर्वर्दिगार, सब का हक़ीकी बादशाह और सब का माबूद है (कि वह मुझे) उस शैतान की बुराई से बचावे जो (चुपके चुपके) लोगों के दिलों में बुरे ख़याल डाला करता है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सत्यभक्त साहित्य

१–सत्यामृत–मानव-धर्म-शास्त्र [दृष्टिकांड]—	१।)
२–सत्यामृत [आचार–कांड]—	१॥)
३–निरतिवाद—	।=)
४–सत्य संगीत—	॥=)
५–जैनधर्म-मीमांसा [भाग १]—	१)
६–जैनधर्म-मीमांसा [भाग २]—	१॥)
७–शीलवती—	-)
८–विवाह पद्धति—	-)
९–सत्यसमाज और प्रार्थना—	-)
१०–नागयज्ञ [नाटक]—	॥)
११–हिन्दू-मुस्लिममेल—	-)॥
१२–आत्म-कथा—	१।)
१३–हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद [उर्दू अनुवाद]—	-)
१४–बुद्ध हृदय—	।=)
१५–कृष्णगीता—	॥।)
१६–अनमोलपत्र—	-)
१७–सुलझी हुई गुत्थियाँ—	।)
१८–कुरान की झाँकी—	=)

मिलने का पता—सत्याश्रम, वर्धा.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com